Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed)
**Journal home page:** www.jmsjournals.in, **ISSN: 2454-8367**
**Vol. 08, Issue-IV, April 2023**

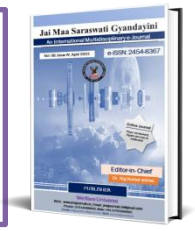

# भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में आजाद हिन्द फौज का योगदान

## (Contribution of Azad Hind Fauj in India's Freedom Struggle)

**Sandeep**[a,*] **Dr. Geeta Awasthi**[b,**]

**a** *Ph.D. History, Jiwaji University, Gwalior, M.P. (India).*

**b** *Assistant Professor, J.C. Mill Girls College, Birla Nagar, Gwalior, Jiwaji University, Gwalior, M.P. (India).*

**KEYWORDS**

आजाद हिन्द फौज, नेताजी, बटालियन, ब्रिगेड, आजादी, युद्ध, भारत, ब्रिटिश, सरकार, राष्ट्र आदि।

**ABSTRACT**

आजाद हिन्द फौज की कमान अपने हाथों में लेने के पश्चात् अक्टूबर 1943 ई0 में ही अस्थायी सरकार के प्रधानमंत्री सुभाष चन्द्र बोस ने ब्रिटेन और संयुक्त राज अमेरिका सहित मित्र राष्ट्रो के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी। भारत की आजादी के लिए सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के प्रशिक्षण के लिए स्कूल खोले। लगभग सारे पूर्वी एशिया के देशों में आई.एन.ए. की शाखाएं स्थापित की गई। सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सैनिको को सम्बोधित करते हुए 'दिल्ली चलों' का नारा दिया, क्योकि उनका माना थ कि अगर आजाद हिन्द फौज भारतीय धरती पर ब्रिटिश सरकार से लडेगी तो ब्रिटिश सेना में मौजुद भारतीय सैनिक भी उनका समर्थन करेंगे। आजाद हिन्द फौज की पहली बटालियन जनवरी 1944 ई. में बर्मा पहुँची। इस बटालियन को बर्मा से आगे बढकर भारत के इम्फाल और कोहिमा पर अधिकार करने के लिये भेजा गया। फरवरी 1944 तक आजाद हिन्द फौज ने बर्मा से होते हुए हाका कालम जैसे पहाडी क्षेत्र में ब्रिटिश फौजों से लोहा लिया। सितम्बर 1944 तक आजाद हिन्द फौज ब्रिटिश सेना से लडते हुए भारतीय भुमि के अनेक क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया था। इस सेना ने भारत के 250 मील क्षेत्र पर अधिकार कर लियय था। लेकिन द्वीतिय विश्वयुद्ध में मित्र राष्ट्रों के विजय हो जाने पर तथा जापान की पराज्य होने के कारण आजाद हिन्द फौज चारों ओर से घिर गई थी, फिर भी वे ब्रिटिश सेना से लडते रहे। अंत में रसद की कमी हो जाने के कारण और नेता जी के आदेश के कारण आजाद हिन्द फौज को आत्म समर्पण करना पडा। अंत में कहा जा सकता है कि सुभाष चन्द्र बोस एवं आजाद हिन्द फौज ने देश की आजादी के लिए प्रयास किया जो सफल नही हो सका। लेकिन इससे भारतीय जनता में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ और लोगों ने ब्रिटिश शासन से मुक्ति के प्रयास किये। अतः 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हो गया।

आजाद हिन्द फौज की कमान अपने हाथों में लेने के पश्चात् अक्टूबर 1943 ई0 में ही अस्थायी सरकार के प्रधानमंत्री सुभाष चन्द्र बोस ने ब्रिटेन और संयुक्त राज अमेरिका सहित मित्र राष्ट्रो के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी।[1] सुभाष चन्द्र बोस ने आई.एन.ए. पुर्नगठन करते हुए इसमें कई अन्य विभाग बनाऐ और इन विभागों को चलाने के लिए योग्य व्यक्ति नियुक्त किए। सैनिकों की भर्ती के पश्चात उन सैनिकों के प्रशिक्षण के लिए ट्रेनिंग स्कूलों की स्थापना की। इन स्कूलों का कार्य युद्धद मोर्चे पर भेजे जाने वाले सैनिकों और अफसरो को अच्छा प्रशिक्षण देना था। लगभग सारे पूर्वी एशिया के देशों में आई.एन.ए. की शाखाएं स्थापित की गई।[2] नेताजी जी सोच यह थी कि जब आजाद हिन्द फौज भारतीय सीमा पर लड़ेगी तो उसी समय भारतीय जनता एवं ब्रिटिश फौजो मे शामिल भारतीय सैनिक भी विद्रोह कर देगे। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने एक गुप्तचर विभाग की स्थापना की। जो आजाद हिन्द फौज के लिए जानकारी इक्ट्ठी करता था तथा भारत में आम जनता को ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह के लिए तैयार करता था। इस विभाग या संस्था की स्थापना पैगांग (बर्मा) के ग्रीन लाईन रोड़ पर स्थित फ्री स्कूल बिलडिंग में एन. राघवन की

**Corresponding author**
***E-mail:** sandeepbeniwal390@gmail.com (Sandeep).
****E-mail:** geeta10awasthi@gmail.com (Dr. Geeta Awasthi). https://orcid.org/0009-0008-0841-0414

**DOI:** https://doi.org/10.53724/jmsg/v8n4.07
Received 20th Feb. 2023; Accepted 18th March 2023; Available online 30th April 2023

2454-8367 /©2023 The Journal. Publisher: Welfare Universe. This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

अध्यक्षता में हुई। इस विभाग या संस्था का नाम स्वराज संस्थान रखा गया।[3] यह संस्था जापान के प्रभाव से पूरी तरह से मुक्त थी। यह विभाग जापानी सरकार से वित्तीय एवं सैनिक सहायता प्राप्त करता था न कि आदेश। युद्ध के पूर्णतया संचालन के लिए सुभाष चन्द्र बोस ने एक 'वार काउसिंल' का भी गठन किया गया।[4] आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को ट्रेनिगं के पश्चात बर्मा में युद्ध के लिए भेजा जाता था। आजाद हिन्द फौज के इन सैनिकों की चार बिग्रेड बनाई गया थी।

इन ब्रिगेडो के नाम भारत के मुख्य व्यक्तियों के नाम पर रखे गए जो इस प्रकार से थी, सुभाष ब्रिगेड, नेहरू ब्रिगेड़ गांधी ब्रिगेड तथा आजाद ब्रिगेड आदि। इन ब्रिगेडो में सुभाष ब्रिगेड गुरिल्ला ब्रिगेड थी अन्य तीन ब्रिगेडों के कमाण्डर शाहनवाज खां, गुरूबख्श सिंह दिल्लो तथा कन्नल गुलजार सिंह को बनाया गया। इसी समय के दौरान जनवरी 1944 ई0 के प्रथम सप्ताह में आजाद हिन्द फौज का हैडक्वाटर (मुख्यालय) सिंगापुर से रंगून (बर्मा) में स्थानान्तरित कर दिया गया।5 क्योंकि बर्मा हिन्दुस्तान के ज्यादा नजदीक था। आजाद हिन्द फौज की प्रथम बटालियन जनवरी 1944 को बर्मा पंहुची । इस समय के दौरान जापान पूर्वी एशिया में मित्र राष्ट्रो के अनेक उपनिवेशों के बिजित कर चुका था। ब्रिटेन बर्मा को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील था क्योंकि वो एशिया में अपने उपनिवेशों को छोडना नहीं चाहता था। अक्टूबर 1942 में भारत के वायसराय लार्ड वेवल ने चीन को ई0 के आरम्भ में मित्र राष्ट्रो के अनेक उपनिवेशो को विजित कर चुका था। ब्रिटेन बर्मा को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील था क्योंकि वे एशिया में अपने उपनिवेशों को विजित कर चुका था। ब्रिटेन बर्मा को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील था 1942 में भारत के वायसराय लार्ड वेवल ने चीन को जापान के विरूद्ध एक सैन्य योजना के लिए सहमत कर लिया था। 1943 ई0 के आरम्भ में मित्र राष्ट्रो के साथ अमेरिका ने भी उत्तरी बर्मा और अक्टूबर के लिए दो बटालियनों की नियुक्ति की। उन्होंने आरकान और मयीतकयीना को पुनः प्राप्त करने का फैसला लिया। टरे 1944 ई0 के आरम्भ में चिडक्रनीन नदी की तरफ से होते अुए बर्मा की और कूच किया।[6] मित्र राष्ट्रो के इस प्रयासों के चलते बर्मा में जापान के द्वारा जीते गए क्षेत्रों को खतरा उत्पन्न हो गया था। इसके अलावा जापान ने अपने साम्राज्य के लिए जिस सुरखा धेरे का निमार्ण किया था उसमें उसके लिए बर्मा अति महत्वपूर्ण था। इसलिए जापान के लिए आवष्यकत हो गया था कि वह आजाद हिन्द फौज के साथ आगे बढ़कर भारत के इम्फाल और कोहिमा पर कब्जा करके इसकी भौगोलिक स्थिति का फायदा उठा सके।[7] ताकि वह कम से कम सेना एवं चल खर्च करके बर्मा को सुरक्षित रख सके। जापान का उद्देश्य भारत पर रणनीतिक दबाव भी बनाना था।[8] 6 जनवरी 1944 ई0 को सुभाष चन्द्र बोस ने रेड़ियों पर महात्मा गांधी को सम्बोधित करते हुए उनसे ब्रिटिश सरकार के विरूध युद्ध करने की आज्ञा मांगी।[9] नेताजी ने उनसे कहा कि अग्रेज दबाव में आए बिना भारत की आजादी के लिए नहीं मानेंगे इसलिए अंग्रजो के खिलाफ हथियार उठाकर लड़ाई किए बिना हमें स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं हो सकती। उनहोंने यह भी कहा कि देश की आजादी के लिए सम्मानजनक शर्तो पर किसी भी बाहरी या दुश्मन देश से सहायता लेने में कोई दोष नहीं है। सुभाष बोस ने बड़े भरोसे के साथ गांधी जी से कहा कि कूटनीति के चतुर खिलाडी अग्रेंज भी उनका बाल बांका नहीं कर पाए तब दूसरे देश के नेताओं द्वारा वे ठगे नहीं जा सकते। उन्होंने महात्मा गांधी को राष्ट्रपिता कहते हुए भारत की आजादी के इस युद्ध के लिए उनका आर्शीवाद और शुभ कामनाएं माँगी।"

7 जनवरी 1944 ई0 नेताजी सुभाष चन्द्र ने बर्मा में जापानी कमाण्डर इन चीफ जनरल कवाबे से मुलाकात की। जनरल कवाबे ने बोस से कहा कि वे आजाद हिन्द फौज की छोटी-छोटी टुकडियों को जापानी सेना की टुकड़ियों में शामिल कर दे परन्तु नेताजी को उनका यह प्रस्ताव ठीक नहीं लगा। इसे अस्वीकार करते हुए सुभाष चन्द्र बोस ने कहा कि इस प्रस्ताव से आजाद हिन्द फौज की युनिटो की कमाण्ड भी भारतीय अफसरों के अधीन रहेगी। और जो भी भारतीय इलाका आजाद हिन्द फौज बिजित करेगी उस पर आजाद हिन्द सरकार का कब्जा होगा। इस विजित किए गए इलाके में मेजर जनरल चटर्जी गर्वनर होंगे कब्जा किए गए इलाके में जो भी गोला, बारूद, हथियार, मशीनरी आदि जो भी होगा

वह अस्थयी सरकार का होगा।[12] बर्मा में इसके पश्चात नेताजी ने आजाद हिन्द फौज के सैनिको के लिए भारतीय नागरिकों से आर्थिक सहायता करने की अपील की। इसके लिए नेताजी फंड समिति बनाई गई। प्रवासी भारतीयों ने भी देश की आजादी के लिए अपना सब कुछ दान इस फंड समीति में जमा करवा दिया। इनमें प्रमुख रूप से श्रीमति हेमराज बंटाई थी। इनके त्याग को महत्व देने के लिए नेताज ने उन्हें सेवक-ए-हिन्द पदक द्वारा सम्मानित किया।[13]

24 जनवरी 1944 ई0 में जापानी सेना के जनरल कात्ताकुरा ने सुभाष बोस और कैप्टन शाहनवाज खां से एक गुप्त बैठक की। जिसमें जनरल कालाकुष ने कलकत्ता पर भारी हवाई हमला करने की सलाह दी लेकिन नेताजी इससे सहमत नही थे। क्योंकि इसमें भारतीय नागरिको का उनसे विष्वास टूट जाने का डर था। सुभाष बोस ने उन्हें आरकान क्षेत्र में हमला करते हुए चिटगांव पर कब्जा करने की सलाह दी। जापानी कमाण्डर भी नेताजी की इस सलाह से तुरन्त सहमत हो गए।[14]

3 फरवीर 1944 ई0 को नेताजी ने सुभाष रेजीमेन्ट के लिए भाशण दिया जिसे 3000 सिपाहियों ने 1 घन्टे खड़े होकर सुना। नेताजी ने उनसे कहा कि आप मेरे बाजुओं की शक्ति हो, जिससे मैं तुम्हारे अधिकारो की रक्षा करने में सक्षम हूँ और यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप युद्ध क्षेत्र में कितनी वीरता से दुश्मनका सामना करते हो। ‘‘आई.एन.ए. अपनी तरह की सबसे पहली संगठित सेना है जो कि जापनियों को दिखने के लिए कठिन परीक्ष से गुजर रही है। यदि कोई सैनिक अपने आपको सक्षम नहीं समझता वह बेषक पीछे रह जाए। हम भारत के नाम को युद्ध क मैदान मे लज्जित नहीं करेगे और न ही दुश्मन का युद्ध में अपनी पीठ दिखाएगे।’’[15] 11 फरवरी 1944 को ‘सुभाष ब्रिगेड’ जिसका नेतृत्व कमाण्डर शाहनवाज खां कर रहे थे को आरकान क्षेत्र में युद्ध लड़ने का आदेश मिला।[16] इस ब्रिगेड को तीन भागों में बाटं दिया गया। प्रथम बटालियन को कहा कि वे मेजर रातूरी की कमान में कालादान घाटी में लड़ेगी तथा दूसरी और तीसरी बटालियने मेजर रण सिंह और पदम सिंह की कमान में माडले (बर्मा) से होती हुए हाका और फालम के पहाड़ी इलाको में जाएगी। इस तरह सुभाष ब्रिगेड की पहली बटालियन रंगून से परोम के लिए खाना हुई। यह ब्रिगेड रेल मार्ग द्वारा प्ररोम के लिए आगे बढ़ी। परोम से टापंग जो लगभग 100 मील का रास्त था वह पैदल तथा कि। सेना का भारी सामान जापानी गाड़ियों द्वारा ले जाया गया। टांपग में आजाद हिन्द फौज का बंकरों पर दुश्मन के विमानों द्वारा भारी बमबारी की गई जिसमें आजाद हिन्द फौज के 16 सैनिक शहीद हुए। आई.एन.ए के परोम पहुंचने के कुछ दिन पश्चात सुचना प्राप्त हुई कि पश्चिम अफ्रीकन निग्रो की एक डिविजन कलादान नद के पूर्वी किनारे से आगे बढ़ रही है जिसे रोकने का कार्य मेजर रातुरी को सौपा गया।[17]

मेजर पी.एस. रातुरी ने लगभग 300 सैनिकां को लेकर दुश्मन सेना को रोकने तेतमा पहुँचे परन्तु तब तक दुश्मन भारी संख्या में कलादान नदी पार करके अपने मोर्चे जमा चुका था। मेजर रातुरी ने दुश्मन पर अचानक हमला करके तेतमा गांव में बास के जंगलों मे घेर लिया। तेतमा गांव की लड़ाई में दुश्मन को खदेड़ कर पश्चिम की और वापस भगा दिया और इसके 50 मील उत्तर में पलटेवा ओर डेलेटम क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया।[18]

सुभाष ब्रिगेड के अलावा बहादूर ग्रुप के इंटैली जैसी ग्रुप की काफी संख्या पहले से ही बर्मा में मौजूद थी। यह ग्रुप कैप्टन मोहन सिंह के समय से ही फ्रंट के ऊपर प्रोपेगडा करने, जासूसी करने तथा पकड़े गए हिन्दुस्तानी जंगी कैदियों की टोलियों में जापानी फौजो की कमान के नीचे काम कर रहे थें इनको अराकाल, बिशनपुर और कोहिमा सैक्टर दिये गये थे। इन्होंने मगडो-बूथीडौग के क्षेत्र में फरवरी 1944 को अंग्रेजो की सातवीं डिविजन के साथ विभिन्न ग्रुपों में टक्कर ली।[19]

बिशनपुर में भी ग्रुप कंमाडर कर्नल एम.ए.मलिक ने बहुतम शानदार काम करते हुए दुश्मन को पीछे खदड़तें हुए इम्फाल से केवल नौ मील दूर रह गये थे। रियासत मनीपुर के जो क्षेत्र आजाद कराये गए थे उनका सम्बंध भी कर्नल एम.ए. मलिक ने अपने हाथों में ले लिया था। आजाद हिन्द फौज का गुप्तचर विभाग भी बर्मा में काफ सक्रिय था। इनकी सुचनाएं पूर्ण रूप से सटीक होती थी ये ब्रिटिश सेना में

शामिल होकर गुप्त रूप से दुश्मन के समाचार आजाद हिन्द फौज और जापान की सेना को पहुँचाते थें।[20]

इसी समय मेजर रातूरी की गुप्त सूचना मिली दुश्मन की एक मजबूत बटालियन कालादान घाटी की तरफ महत्वपूर्ण पहाड़ी में छिपी है। मेजर रतुरी ने दुश्मन पर रात के समय में हमला करने का निर्णय लिया तथा दुश्मन के मोर्चे में बन्दूक से आमने सामने की लड़ाई हुई जिसमें आजाद हिन्द फौज के सैनिक 'भारत माता की जय' 'नेताजी की जय' आदि के नारे लगा रहे थे। युद्ध का के मैदान में आजाद हिन्द फौज के सैनिकों का हौसला बुलन्द देखकर दुश्मन युद्ध का मैदान छोड़कर भागने लगें परन्तु आजाद हिन्द फौज के सैनिकों ने उनका पीछा करते हुए मशीनगनों से फायर किये जिसमें दुश्मन की 16 नौकाएं डूब गई इस लड़ाई में आई.एन.ए. के 16 सिपाही शहीद हुए तथा 22 सैनिक घायल हो गया जबकि ब्रिटिश फौज के 250 सैनिक मारे गए। शत्रु की बड़ी मात्रा में युद्ध एवं खाद्य सामग्री प्राप्त हुई।[21] यहां से कलादान नदी को पार करके 40 मील दूर पश्चिम में भारतीय सीमा थी और उसके नजदीक ब्रिटिश फौजो की मेडाक चॉकी थी। आजाद हिन्द फौज के सिपाही शीघ्रता से अपने अधिकारियों के पास गये और कहा कि नेताजी का आदेश था कि हमारी मातृभूमि पर जितना जल्दी हो सके तिरंगा झण्डा फहराया जा सके।[22] अतः आई.एन.ए. के सैनिक बिना विश्राम किए शीघ्रता से हिन्दुस्तान की भूमि पर पहुंच कर राष्ट्रीय झण्डा चाहते थें। मेजर रातूरी ने उन्हे रात के समय में मैडाक चौकी पर तेज गाति से हमला करके इस पर अधिकार कर लिया।[23] इसके समीप में यहां से लगभग 50 मील की दूरी पर काक्स बाजार से दूर ब्रिटिश सेना की दूरी चौकी थी। आई.एन.ए. का भारतीय सीमा मे प्रवेश देखते लायक था आजाद हिन्द फौज के सिपाही अपनी मातृभूमि की मिट्टी पर लेट गए तथा उस मिट्टी को चूमने लगे। इसके पश्चात राष्ट्रीय झण्डा फहराने की रस्म अदा की। और आजाद हिन्द फौज का राष्ट्रीय गीत गाया गया।[24] मैडाक चौकी पर आजाद हिन्द फौज का अधिकार हो जाने के पश्चात शीघ्र ही ब्रिटिश फौजो ने आई.एन.ए. पर प्रत्याक्रमण शुरु कर दिए। मेडाक में इस समय राशन की सप्लाई होता था जहां पर दुश्मन दिन रात बहुत ही चौकन्ना रहता था। ब्रिटिश फौजो द्वारा मैगंडा और बुत्थीराम की तरफ से हुए आक्रमण के कारण जापानी कमाण्डर ने मेडाक से अपनी फौजो को हटाने का फैसला लिया उन्होंने मेजर रातूरी को भी ऐसा करने की सलाह दी। मेजर रातूरी ने अपने सहयोगियों को बुलाकर एक मीटिंग में उन्हें स्थिति से अवगत कराया। सभी अधिकारीयों ने एक आवजा में मेजर रातूरी को बताया। यदि जापानी पीछे हटते है तो उन्हें पीछे हटते दो लेकिन हमें तो दहली पर कब्जा करने के आदेश हैं। दिल्ली हमारे सामने है हमने अपनी मातृभूमि को आजाद करवा कर राष्ट्रीय झण्डा फहराना है हम दुश्मन को पीठ नहीं दिख सकते है। हमारा मकसद दिल्ली है जो हमारे सामने है। इसलिए हमें पीछे नहीं हटेंगे।[25]

मेजर रातूरी ने आखिर में उनकी देशभक्ति और बहादूरी की प्रशंसा की और परिस्थितियों को देखते हुए तथा राष्ट्रीय झण्डे की रक्षा के लिए मेडाक में एक कम्पनी कैप्टन सूरजमल की कमान में छोड़ने का फैसला लिया। भारतीयो के बुलन्द होसलो को देखते हुए जापानी कमाण्डर ने भी कुछ जापानी सैनिको को कैप्टन सूरजमल की अधीनता में छोड़ दिया गया। जापानी फौज के इतिहास में षायद यह पहला अवसर था कि उसके जवानो को किसी विदेशी फौज के अफसर की कमान में छोड़ा गया था।[26]

मेजर रातूसी, कैप्टन सूरजमल तथा आजाद हिन्द फौज के अधिकारी एवं जवानों ने युद्ध के मैदान मे सबको यह अहसास कर दिया था कि भारतीय युद्ध में संसार के किसी भी देश के सैनिकों से कम नहीं है। कैप्टन सूरजमल के नेतृत्व में यह सेना की टृकड़ी मई से सितम्बर 1944 ई. तक लोहा लेते रहे। अग्रेजो द्वारा उन पर बार-आक्रमण होते रहे परन्तु उन्होंने दुश्मन को हर बार पराजय दिखाई सितम्बर 1944 ई. तक लोहा लेते रहे। अग्रेजों द्वारा उन पर बार-2 आक्रमण होते रहे परंतु उन्होंने दुश्मन को हर बार पराजय दिखाई सितम्बर 1944 ई0 में आजाद हिंद फौज भोजन की कमी तथा अन्य बिमारियां फैलने के कारण पीछे हट गयी। सुभाष ब्रिगेड की यह बटालियन नवम्बर के मध्य पीछे हटकर रंगून पहूँची।[27]

उधर सुभाष ब्रिगेड की दूसरी और तीसरी दोनो बटालियने माण्डले से चीन पहाडियो से होते हुए हाका फालम में भेज

गई थी। यहां से वे कलेवा में पहुंचे, कलेवा में मौजूद जापानी सेना के कमाण्डर आजाद हिन्द फौज के सैनिको को युद्ध में शामिल नहीं करना चाहते थे। इसलिए जब शाहनवाज रंग ने जापानी कमाण्डर जनरल मुटांगूथी से युद्ध करने का आदेश लेने गए तो उन्होंन उसे हाका फालम में मोर्चे की रक्षा का भरत सौप दिया।[28] क्योंकि हाका फालम के रास्ते से कलेवा होकर टापू और फोर्ट वाहिर में जापान की सेना को मद्द पहुचाई जाती थी।

ब्रिटिश सेना इस रास्ते पर अधिकार करना चाहती थी। ताकि जापानी सैनिकों को रसद सामग्री प्राप्त न हो सके। यह एक दुर्गम पहाड़ी इलाका था। यह इलाका 6 से 7 हजार फीट ऊँची पहाडियों से भरा था जहां संचार के साधनों का जाना भी काठिन था। इस क्षेत्रों में प्रतिदिन आई.एन.ए. के सैनिको को जाना पड़ता था।[29] इस इलाके में अंग्रेज और चिन के गुरिल्ले छापामार सेना के रूप में कार्य कर रहे थे। वे आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को अपनी और मिलाने के पक्ष में कारण कर रहे थे। लेकिन आई.एन.ए. की सुभाष ब्रिगेड ने अराकान एवं चिन इलाकों में ब्रिटिश फौजो को बुरी तरह से पराजित किया और कोई भी सैनिक दुश्मनों से नहीं मिला। इस लड़ाई से आजाद हिन्द फौज के सैनिकों की बहादूरी देखकर जापानी सैनिक भी हैरान रह गए थे। उनके मन की सारी शंकाए अब दूर हो गयी थी। जापान के सेनापति ने आई.एन.ए. के सैनिको की वीरता से प्रभावित होकर एक आदेश जारी कर दिया कि सारी सुभाष ब्रिगेड़ कोहिमा जाए और इम्फाल का पत्तन होते ही ब्रहापुत्र नदी को पार करके बंगाल में घुस जाए।[30]

इसके पश्चात जनरल शाहनवाज खां ने मेजर रणसिंह जो नम्बर 2 बटालियन के कमाण्डर थे उनको आदेश दिया कि वे जापनियों से फालम क्षेत्र को अपने चार्ज में ले। मेजर रण सिंह के साथ 500 सैनिकों को फालम में छोड़ दिया ताकि सेना की रसद और युद्ध साम्रगी के लिए कोई रास्ता अवरूद्ध न हो। यहां से 85 मील दूरी पर हाका क्षेत्र था इस क्षेत्र को एक पहाड़ी पगंडडी ही जोड़ती थी। हाका 7000 मी0 की उंचाई पर स्थित था तथा इस इलाके मे ठंड काफी मात्रा मं पड़ती थी।[31]

मार्च 1944 में आजाद हिन्द फौज को टिडिम क्षेत्र पर अधिकार के लिए भेजा गया। शीघ्र ही आई.एन.ए के सैनिको ने जापान के सहयोग से इस क्षेत्र पर अधिकार कर लिया परन्तु 17 मार्च को सूचना मिली कि फलम क्षेत्र से 40 मील पश्चिम की तरफ से कलखुआ क्षेत्र की तरफ से दुश्मनों की िएक कम्पनी आगे बढ़ रही है।[32] ले0 सिकन्दर खांन को इस दुश्मन की कमपनी का सामाना करने का आदेश मिला और साथ में यह भी निर्देश दिया गया कि दुश्मन फौज मिलाने का प्रयास करे। परन्तु वे यदि उन पर हमला करे तो उनका पूर ज़ोर षोर से सामना किया जाए। इस कार्य के लिए उनको 100 सैनिकों के साथ भेजा गया। ऊंची पहाडियों पर सारी रात चलते हुए वे जोमूऊल पहुँचे। जहां उन्होंने कुछ देश विश्राम किया और तभी उन्हें सूचना मिली कि दुश्मनो की एक टुकडी इसी तरफ बढ़ रही है। ले. सिकन्दर ने दुश्मन फौज का सामना करने का निर्णय और सैनिकों को हमले के लिए तैयार रहने का निर्देश दिया। अचानक ही सिकन्दर खां दुश्मन के कमाण्डर के सामने पंहुच गए और उनके सामने पिस्तौल तान दी और उन्हें आत्मसमर्पण करने को कहा। यह अधिकारी लुईस ब्रिगेड था, जिसने ने आपने सैनिकों सहित आत्मसमर्पण कर दिया।[33] पूछताछ करने पर इस अधिकारी ने बताया कि अग्रेज सेना की दो और टुकड़िया फलम क्षेत्र की ओर अलग-2 दिशाओं से आगे बढ़ रही है। जिनमें बहुचर्चित गुरिल्ला लड़ाकू अधिकारी मेजर मैनिंग भी शामिल है। अतः ले. सिकन्दर खां ने मेजर मैनिंग को पकड़ने के लिए फालम की और बढ़ा। इस समय वह नाल में था पहली घेराबन्दी के पश्चात् सिकन्दर खांन ने आत्म समर्पध्स करने को कहा लेकिन मैनिंग धोखा देखकर भाग गया। इसके पश्चात ले0 खान युद्धबंदी सैनिकों को लेकर देखकर भाग गया। इसके पश्चात ले. खान युद्धबंदी सैनिकों को लेकर फालम में पहुंच गए।[34]

28 मार्च 1944 ई0 को सुभाष ब्रिगेड की न0. 2 बटालियन की परवाना कम्पनी लेफ्टीनेंट अमरिक सिंह की कमाण्ड से मिथा से फालम पहूँची। इस टुकड़ी का हर सैनिक अपनी पीठ पर भारी मशीनगने व हथियार एवं एक महीने का राशन भी लाया था। इस कम्पनी के साथ शाहनवाज खां भी फलम से आगे निकले थे कि उनको सूचना मिली कि दुश्मन उन पर चुनसोंग में हमला करेन की तैयारी में है उन्होंने दुश्मन पर

पहले आक्रमण करने का निर्देश दिया। शीघ्र ही ले0 लहणा सिंह की कमाण्ड ने दुश्मन के उस गांव पर अधिकार कर लिया। और हाका क्षेत्र की ओर आगे बढ़े।[35]

हाका क्षेत्र में 3 अप्रैल 1944 को पहुंच कर आजाद हिन्द फौज ने हाका की सुरक्षा का भारत जापानियों से सम्भाल लिया। हाका क्षेत्र की स्थिति फलम क्षेत्र से ज्यादा खराब थी। यहां पर राशन आपूति की सबसे बड़ी समस्या थी और दुश्मन की ताकत को देखते हुए ज्यादा से ज्यादा सैनिकों की जरूरत थी लेकिन राशन सप्लाई का केन्द्र 85 मील दूर होने के कारण यह असम्भ कार्य था।[36] हाका क्षेत्र सुरक्षा के लिए कैप्टन अमरीक सिंह को कहा गया कि वे दुश्मन को भ्रम में रखते हिए दुश्मन पर लगातार आक्रमण करते रहे ताकि दुश्मन को यह भ्रम रहे कि आजाद हिन्दू फौज के पास हाका में ज्यादा शक्ति है।[37] यह योजना सफल रही। इस योजना की सफलता का श्रेय मेजर महबूब अहमद, ले. रणसिंह और कैप्टन अमरीक सिंह को जाता है जिन्होंने बड़ी बहादूरी से दुश्मन पर पीछे से हमला करके, दुश्मन को अपना बचाव करने पर विवश कर दिया था। यह कार्य किसी भी तरह से आसानकार्य नही था।[38]

28 अप्रैल 1944 ई0 में शाहनवाज खां को नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की तरफ से सुचना मिली की नम्बर डिविजन जिसमें आजाद ब्रिगेड तथा गांधी ब्रिगेड शामिल है, वो इफ्फाल पर हमला करने जा रही है और सुभाष ब्रिगेड ब्रहापुत्र नदी के दूसरी तरफ पहुचने के लिए तैयार रहे। जनरल शाहनवाज खां ने शीघ्र ही ब्रिटिश फौज पर कलांग में हमला करने का आदेश दे दिया लेकिन यहां पूर दुश्मन पर हमले के लिए तोपखाने की आवश्यकता थी जो दुर्भाग्यवश आई.एन.ए. के पास नही थे।[39] हाका से जनरल शाहनवाज खां ने तीसरी बटालियन को उखरला की तरफ से आगे बढ़ने का आदेश दिया और स्वयं मेजर रामस्वरूप तथा अन्या अधिकारी एवं सैनिको के साथ नवचांग की तरफ से कूच कियर। इससे आगे बढ़ते हुए इम्फाल की तरफ की तरफ कूच करने की सोची। शाहनवाज खां के नेतृत्व में यह बटालियन तामू के रास्ते से जंगलो की झांडिया काटकर रास्ता बनाती हुई आगे पहुंची वहां से तत्पाश्चात सुभाष ब्रिगेड पलेल तक जा पहुंची।[40] यहां कुछ समय रूककर सुबह 4 बजे उन्हें इम्फाल पर हमला करना था परन्तु दिन के 3 बजे ही इस फौज पर ब्रिटिश फौज का हवाई हमला हो गया जिसमें आजाद हिन्द फौज के बहुत से सैनिक मारे गए तथा भारी संख्या में सैनिक घायल हो गए थे। परन्तु भी फिर कुछ बचे हुए सैनिको को लेकर जनरल शाहनवाज खां दुर्गम पहाड़ी क्षेखे से होते हुए कोहिमा पहुंचे। इन कठिन भौगोलिक स्थितियों में न तो उनके पास खाने के लिए रसद सामग्री थी न ही उपचार के लिए दवाईयां थी।[41]

आजाद हिन्द फौज के सैनिको को केवल इस बात का संतोश था कि वे भारत क भूमि पर देश की आजादी के लिए लड़ रहे है ताकि उनको ब्रिटिश गुलामी से मुक्ति मिल सके। आजाद हिन्द फौज और जापान की सेना ने 1944 ई0 तक मिलकर डरवरूल और कोहिमा उस उसके आस-पास के ज्यादातर क्षेत्रो पर अपना अधिकार कर लिया था।[42]

इस समय के दौरान गांधी ब्रिगेड जिसका नेतृत्व कर्नल आई.जे.कियानी कर रहे थे, को अप्रैल 1944 ई. मे इम्फाल में होने वाली लड़ाई में हिस्सा लेन का आदेश प्राप्त हो गया।[43] इस आदेश के मिलते ही कर्नल आई जे कियानी रगून से गांधी ब्रिगेड को लेकर चल दिए। इस ब्रिगेड के लिए इम्फाल पहुंचने की राह काफी कठिन थी परन्तु फिर भी वे 1944 ई0 में कलेवा तक पहुंच गए। यहां पर जापानियों ने कर्नल आई. जे कियानी को सूचना दी कि वे इम्फाल पर हमला करने मे लेट हो चुके है अतः वे शीघ्रता से मोर्चे पर पहुंचे। तामू पहुचने पर इन्हांने पाया कि अभी तक इफ्फाल को विजित नहीं किया जा सका है, और पलेल में आई.एन.ए. और ब्रिटिश फौजों में घमाससन लड़ाई चल रही हैं उसने पलेल मोर्चे पर जापानी कमाण्डर से सम्पर्क किया और यह फैसला लिया कि तामू-पलेल रोड़ पर गांधी ब्रिगेड की एक बटालियन दुश्मन के खिलाफ गुरिल्ला गतिविधियां चलायेगे।[44]

मई 1944 ई. में मेजर फूजीवारा कर्नल जे. कियानी के पास आए और सूचित किया कि जापानी सेना पलेम ऐरोड्रम पर हमला करने जा रही है और यह जानना चाहते है कि आजाद हिन्द फौज भी इस हमले में जापान का सहयोग करेगी। कर्नल कियानी ने उन्हें विष्वास दिलाया कि पलेल ऐरोड्रम पर कब्जा करना जापानियो के लिए आसान नहीं है परन्तु फिर भी इस युद्ध में आई.एन.ए. उनका पुरा सहयोग करेगी।[45]

कुछ ही समय में बहुत भंयकर लडाई के पश्चात मेजर प्रीतम सिंह ने जापानियों के साथ मिलकर पलेल ऐरोड्रम पर कब्जा कर लिया। परन्तु ज्यादा समय तक आई.एन.ए. ऐरोड्म पर कब्जा नहीं रख सक क्योकि ब्रिटिश फौजो और बमवर्शक जहाजों द्वारा आजाद हिन्द फौज पर भारी बमबारी शुरु कर दी जो सारा दिन तक चलती रही। मेजर प्रितम सिंह और उसके सैनिकों को कई दिनो तक ऐरोड्रम में भुखा रहना पड़ा। इस समय न ही आई.एन.ए. की गांधी ब्रिगेड़ के पास भारी मशीनगने व हथियार थे जिसके परिणामस्वरूप के काफी संख्या में घायल हो गए। परन्तु वहां खड़े जहाजो का नश्ट करके आजाद हिन्द फौज ने ब्रिटिश सेनाक को बड़ा चक्का पहुंचाया था इस हमले के परिणाम स्वरूप् ब्रिटिश फौज ज्यादा सत्तर्क हो गयी थी। दुश्मन लगातार हवाई जहाजो के गोले बरसा कर आजाद हिन्द फौज का मार्ग अवरूद्ध कर रहा था परंतु फिर भी इन कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए आजाद हिन्द के सैनिक लगातार आगे बढ़ते रहे। उनके इस परिश्रम ओर साहस को देखते हुए स्वय जापानी भी हैरान हो जाते थे।[46] जून 1944 ई0 में पटेल में वर्शा आरम्भ हो जाते के कारण आजाद हिन्द फौज को भंयकर काठिनाईयों का सामना करना पड़ा। आई.एन.ए. के पास भारी मानसूनी वशा से बचाव के कोई विषेश साधन नहीं थी। भारी वर्शा के कारण लामू-पलेल मार्ग ढह गया जो आजाद हिन्द फौज के लिए रसद सामग्री पहुंचने का एकमात्र रास्ता था परन्तु फिर भी कर्नल जे कियानी और उसके सहयोगियों ने हार नहीं मानी उन्होंने 1944 ई0 के मध्य तक भारतीय सीमा के लगभग 200 स्कवेयर मील क्षेत्र पर कब्जा कर लिया था।[47]

1944 ई0 में मध्य आनेतक इस समय जापान की हालात भी इस विष्वयुद्ध में खराब होने लगी थी। जापान की सेना को अपने अधिकतर विमान एवं सैनिक प्रशांत महासागर में अमेरिका और उसके सहयोगियों से लड़ने के लिए लगान पड़ रहे थे परिणामस्वरूप आजाद हिन्द फौज को जापान से मिलने वाला सहयोग भी कम मिल रहा था।[48] यहां से आजाद हिन्द फौज को आगे कोहिमा जाकर इस पर कब्जा करना था। गांधी ब्रिगेड ने आगे बढ़ते हुए अनेको ब्रिटिश चौकियों पर कब्जा करना था। गांधी ब्रिगेड ने आगे बढ़ते हुए अनेको ब्रिटिश चौकियों पर कब्जा करते हुए कोहिमा की तरफ आगे बढ़ी। रास्ते में उन्होंने नागा जातियों के सहयोग से अपने लिए खाद्य सामग्री का प्रबंध किया। कोहिमा में पंहुच कर वे ब्रिटिश फौजो से जा भिड़े। कोहिमा पर कब्जा करने के लिए एक-2 इंच भूमि को लेकर भंयकर लड़ाई के पश्चात जीत लिया गया था कोमि पर आजाद हिन्द फौज का कब्जा हो जाने के पश्चात जीत लिया गया था, कोहिमा पर आजाद हिन्द फौज का कब्जा हो जाने के पाश्चात जीत लिया गया था कोहिमा पर आजाद हिन्द फौज का कब्जा हो जाने के पश्चात जीत लिया गया था, कोहिमा पर आजाद हिन्द फौज का कब्जा हो जाने के पश्चात सुभाष चन्द्र बोस ने रेड़ियों पर भारतीय जनता का सम्बोधित करने हुए कहा "कि आजाद हिन्द फौज भारत भूमि पर पहुंच चुकी है। शीघ्र ही वह ब्रिटिश फौजो को पराजित करते हुए दिल्ली को फतेह कर लेगे"।[49] मैं जनता से अपील करता हूँ कि आप लोगो अपने मन से अग्रेजों का भय निकाल दे और उनके विरूद्ध भारत में खड़े हो जाए। आई.एन.ए. ने कोहिमा को जीत लियाहै। आजाद हिन्द फौज कोहिमा पर कब्जा करने के बाद दिमापुर की तरफ आगे बढ़ी एक भंयकर युद्ध के पश्चात आई.एन.ए दिमापुर पर कब्जा करने से दो मील दूर रह गये थे कि तभी ब्रिटिश वायुसेना द्वारा भारी बमबारी तथा पेरासूट से नई कुमुक आ जाने के कारण आजाद हिन्द फौज का इस लड़ाई में भारी नुकसान उठाना पड़ा। जिसके परिणाम स्वरूप् मे दिमापुर को नहीं जीत सके। गांधी ब्रिगेड के चारो तरफ से दुश्मन से घिर जाने के कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा। क्योंकि इस समय तक आजाद हिन्द फौज के सैनिको की रसद और खाद्य सामग्री भी लगभग समाप्त हो चुक थी।[50] दूसरी तरफ दुश्मन ने भारी मात्रो में खाद्य सामग्री भी लगभग समाप्त हो चुकी थी। दूसरी तरफ दुश्मन ने भारी मात्रों में खाद्य सामग्री और सेनिक इम्फाल और कोहिमा में आजाद हिन्द फौज और जापानियों के विरूद्ध उतार दिए थे। ताकि वे इनको पराजित करके पुनः बर्मा पर अधिकार कर सके। इसका भार गांधी ब्रिगेड पर पड़ा उसे दिमापुर से पीछे हटना पड़ा।[51]

आजाद ब्रिग्रेड जिसके कमाण्डर गुलजारा सिंह थे वे रंगून से कलेवा होते हुए तामू में पहुँचकर सुभाष ब्रिग्रेड से जा मिली।

इस ब्रिग्रेड को तामू के आस-पास मे ब्रिटिश फौजों पर जोरदार हमला करने का आदेश मिला था तामू में इस ब्रिगेड ने अपनी कार्यवाही आरम्भ कर दी और अपने लिए नए अड्डे तैयार किया।[52] इस ब्रिगेड को तामू रोड के उत्तर में मीथा क्षेत्र में तैनात हुई थी। परन्तु शीघ्र ही भारी बारिस हो जाने के कारण यह ब्रिग्रेड भी अपने उददेश्यों को प्राप्त नही कर सकी। उधर इम्फाल में भी आजाद हिन्द फौज की सुभाष ब्रिगेड को अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त नहीं मिल सकी। बारिश के कारण दुर्भाग्य वंश आजाद हिन्द फौज के पास इम्फाल में रसद और खाद्य सामग्री की कमी हो जाने के कारण और मित्र राष्ट्रो द्वारा ज्यादा संख्या में अपनी फौजे उतार देने के कारण जापानियों और आई.एन.ए. को पीछे हटना पड़ा।[53] मानसूनी बारिस के कारण तामू पलेल रोड़ बह गया था जिस कारण से आजाद हिन्द फौज के पास रसद पहुंचने का मार्ग बंद हो गया उस समय तक आजाद हिन्द फौज के पास रसद पहुंचने का मार्ग बंद हो गया उस समय तक आजाद हिन्द फौज के पास 250 वर्ग मील का भारतीय क्षेत्र था इम्फाल में आजाद हिंद फौज की पराजय का मुख्य कारण इम्फाल हमला काफी देर से हुआ। इसके अलावा जापान को अपनी वायुसेना को प्रषान्त महासागर में लगाना पड़ गया थ। इनके अतिरिक्त मानसून ने भी ब्रिटिश सेनाओं को सहयोग किया। इस बारिष में आजाद हिन्द फौज को ज्यादातर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आजाद हिन्द फौज के सैनिको में अनेक बिमारिया फैल गई।[54] युद्ध में घायल सैनिकों को समय परन प्राथमिक उपचार नहीं मिल सका जिसक कारण आजाद हिन्द फौज को इम्फाल व अन्य जगहों पर भारी हानि उठानी पड़ी। जिससे आई.एन.एव के सैनिको को युद्ध मोर्चे से पीछे हटना पडा।[55] इम्फाल से पीछे हटने पर सुभाष ब्रिगेड और आजाद ब्रिग्रेड वापिस तामू पहुंची। तामू में पहुचकर के कलेल में गांधी ब्रिगेड़ से मिले और अपनी युद्ध नीति पर योजना बनानी शुरु कर दी।

अक्टूबर 1944 ई. में आजाद हिन्द फौज की नेहरू ब्रिग्रेड ले. कर्नल जी.ए. ढिल्लो के नेतृत्व में बर्मा से मिग्यान पहुंची। इस ब्रिगेड क डयूटी यह थी कि दुश्मन को मिग्यान इलाके में इरावती नदी को पार करने से रोकना था। इस रेजीमेंट अधिकतर संख्या में तमिल भाशी सिपाही थें ये युद्ध के समय मलाया से आजाद हिन्द फौज में भर्ती हुए थे। इस ब्रिगेड के पास केवल राईफले ओर अन्य छोटे हथियार ही थे। इस स्थान पर इनको दुश्मन के टैकों और हवाई जहाजों से बचते हुए ब्रिटिश फौजो से लड़ना पड़ रहा था। दुश्मन के टैको और जहाजो ने इस ब्रिगेड का काफी नुकसान पहुचायां।[56] परन्तु फिर भी ये युद्ध के मैदान में खड़े रहे। इस ब्रिगेड के कुछ सिपाहियों ने तो अपने षरीर पर विस्फोटक सामग्री बांधकर ब्रिटिश टैंका को नश्ट करते हुए अपने प्राणों क आहुति दी। इसके अलावा अग्रेजों के एक दल ने जन इरावती नदी को पार कर लिया था उससे लड़ते हुए युद्ध के मैदान में अद्भूत वीरता का परिचय देते हुए दुश्मन को पीछे हटने पर मजबुर कर दिया था परन्तु शत्रु द्वारा इस इलाके में पैरासूटो द्वारा आई.एन.ए सैनिको के पीछे अपनी कुमुक (सेना) उतार देने के परिणामस्वरूप नेहरू ब्रिगेड की यह बटालियन दुश्मन की सेना से चारो तरफ से घिर गई तथा उनके कुछ जवानों को हथियार भी डालने पड़े। षेश बची हुई यह बटालियन पोपा क्षेत्र में होते हुए परोम में पहुंच गई परन्तु फिर भी इस बटालियन को ब्रिटिश फौजो से छुटकारा नहीं मिला। परोप के मागी गांव नाम स्थान पर हुई एक भयंकर लड़ाई के पश्चात इस सेना के दुश्मन द्वारा घिर जाने पर अपने हथियार डालने पर विवश होना पड़ा।[57]

नेहरू बिग्रेड की दूसरी पैदल रजीमेंट जो कैप्टन प्रेम कुमार सहगल की कमाण्ड में थी, उसको नेताजी से यह आदेश प्राप्त हुआ कि वे अपनी रेजीमेन्ट के साथ बर्मा से परोम तथा क्योकदान के रास्ते से होते हुए पोपा जाए। ताकि पोपा में इक्टठे होकर दुश्मन के खिलाफ एक मजबूत मोर्चो बनाया जा सके। कैप्टन प्रेम कुमार सहगल तुरन्त ही बर्मा से आगे बढ़ते हुए दुश्मन की चौकियों को जीतते हुए पोपा में जा पंहुचे। पोपा में पहुचकर में अपनी मोर्चाबंदी करने मे लग गए ताकि पोपा में दुश्मन सेना को वे पराजय दे सके।[58] कुछ ही समय शाहनवाज खं अपने सभी साथियों सहित पोपा में आ गए। पोपा मे पंहुच कर उन्होंन आजाद हिन्द फौज की नेहरू ब्रिगेड की कमान भी अपने हाथां में ले ली। उन्होंन इन डिविजनों को कई पलटनों में बांट दिया ताकि ये दुश्मन की सेनाओं से विभिन्न स्थानों पर लड़े सके। इन पलटनों ने पिनबिन, सीकटीन लेगी तथा अन्य स्थानों पर अपने

कमाण्डर के अधीन ब्रिटिश फौजो से पोपा लोहा लिया।[58]

इस समय तक झांसी की रानी रेजीमेंट ने तक आजाद हिन्द फौज के साथ युद्ध में ब्रिटिश फौजो के खिलाफ लोहा नहीं लिया था। इनकी कप्तान लक्ष्मीनाथन थी। जिसक कमाण्ड में यह रेजीमेंट बर्मा के माथमयों में जहां आई.एन.ए. का बेस अस्पलात था, जिसमें लगभग 2000 रेगी थे। इनमें से अधिकतर बन्दूको की गोल लगने से जख्मों में जहर फैलने से मलेरिया जैसी बिमरीयां फैलने से भर्त हुए थे।[59] इस अस्पताल में झांसी की रानी रेजिमेन्ट की लडकियां नर्सो के रूप में कार्य कर रही थी। ताकि आई.एन.ए. के सैनिक ठीक होकर पुनः युद्ध में जाकर ब्रिटिश फौजो से लड़ सके इसके अलावा इस रेजीमेंट की स्त्रीयाँ आजाद हिन्द फौज में गुप्तचर विभाग में कर रही थी। उनके इस कार्य एवं साहस को देखते हुए नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने उनकी प्रषंष की । उन्होंन कहा कि जब तक हमारी माताएं एवं बहने हमारे साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर खड़ी रहेगी तब तक कोई हमें पराजित कही कर सकेगें। वे वास्तव में किसी भी प्रकार से रानी झांसी से कम नही है। आजाद हिन्द फौज के सैनिक भारतीय भूमि पर दुश्मन से लड़ रहे है और ये हमारी माताएं और बहने हमारी बिमारियां और घाव को ठीक करने के लिए रह रही है।[60] इसके पश्चात नेताजी ने इस अस्पताल में सभी को भोज देने का निर्णय किया। उन्होंने अपने घर जलेबियां बनवाई और इस अस्पताल में भेज दी। यहां से कुछ समय पश्चात नेताजी सुभाष चन्द्र बोस आजाद हिन्द फौज का होसला बढ़ाने के लिए मटकीला में पहुंच गए थे। यहां से होते हुए वे योपा में पहुँचे। जहाँ पर नेताजी ने कैप्टन शाहनवाज खां और प्रेम सहगल से मुलाकात की और युद्ध की स्थिति का आकलन किया परन्तु युद्ध के कठिन हालातो को देखते हुए शाहनवाज खां ने नेताजी को वापिस बर्मा में जाने की सलाह दी। परन्तु नेताजी जो फैसला कर लेते थे उसी पर कायम रहते थे। वे भी शाहनबाज खां के साथ पोपा में शत्रुओं से घिर गए थे। दुश्मन द्वारा रंगून पर आक्रमण कर देने के समाचार के कारण उन्हें वापिस बर्मा लौटना पड़ा।[61]

इसी समय के दौरान कैप्टन प्रेम कुमार सहगल भी पोपा में शत्रु टैंको द्वारा घिर गए थे। उनकी एक बटालियन जो कैप्टन बागड़ी के अधीन थी उन्होंने दुश्मन के सामने हथियार डालने की अपेक्षा दुश्मन से लड़कर मरना कबूल किया उन्होंने युद्ध में लड़ते-2 युद्ध के मैदान में वीरगति प्राप्त की। शीघ्र ही कुछ समय पाश्चात प्रेम सहगल को उनके सेना के साथपोपा में हथियासर डालने पड़ गए। इस समय तक दुश्मन तेजी से बर्मा की ओर बढ़ता जा रहा था।[62]

1945 ई. के आरम्भ में मित्र राष्ट्रो की स्थिति धूरी राष्ट्रो के खिला। मजबूत होने लगी थी। यूरोप में इटली की पराजय के पश्चात एशियामें ब्रिटिश और अमेरिकी सेनाओं ने जापान को चारो ओर से घेर लिया था प्रषांत महासागर में हुई एक घमासान लड़ाई के पश्चात शत्रु शक्ति ने यह साफ कर दिया था कि अब द्वितीय विष्व युद्ध का अंतः मित्र राष्ट्रो क पक्ष में होगा।[63]

दूसरी तरफ युरोप में इटली की पराजय के पाश्चात मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी के विरूद्ध नया मोर्चो खोल दिया था जिसके परिणाम स्वरूप जर्मनी की पराजय होने लगी थी जर्मनी के पत्तन के पश्चात मित्र राष्ट्रो ने बर्लिन पर कब्ज कर लिया। इटली और जर्मनी की पराजय के पश्चात मित्र राष्ट्रो ने जापान पर भी भारी मात्रा में बमबारी आरम्भ कर दी।[64] अब जापान को भी पत्तन निष्चत था, मित्र राष्ट्रो की सेनाओं ने शीघ्र ही भारत, बर्मा, सिंगापुर और बैकांक में ज्यादा से ज्यादा संख्या में पहुंच कर जापान और आजाद हिन्द फौज को खदेड़ना शुरु कर दिया। 6 अगस्त 1945 ई0 को जापान के हिरोशिमा तथा नागाशाकी पर अमेरिका द्वारा अणु बम गिराए जाने के पश्चात जापान ने मित्र राष्ट्रो के सामने आत्म सर्मपण कर दिया। जापान की पराजय के पश्चात आजाद हिन्द फौज चारों और से शत्रुओं से घिर गई परन्तु फिर भी आजाद हिन्द फौज के सैनिक पिछे हटने को तैयार नहीं थे, अतः में ब्रिटिश फौजो द्वारा उन्हें खदड़ते हुए बर्मा में पीछे हटने पर विवश होना पड़ा। और मित्र राष्ट्रो की सेनाओं के सामने झुकना पड़ा। आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को गिरफ्तार करके उन्हें रंगून तथा पींगू की जेलो में डाला गया था। बर्मा में आजाद हिन्द फौज की पराजय और सैनिकों के द्वारा अनुरोध करने पर भी नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने ब्रिटिश फौजो के सामने आत्मसर्मपण नहीं किया ये

रंगून (बर्मा) से हवाई जहाज द्वारा फार्मोसा पहुचे। 18 अगस्त 1945 ई0 को फोमेरिना से टोकियों जाते हुए उनके जहाज में आग लग गयी। जिसमें नेताजी गंभीर रूप से घयल हो गए थे उनको सिंगापुर के एक हस्पताल में भर्ती करवाया गया। हस्पताल में ही ईलाज के दौरान छः घन्टे पश्चात नेताजी का निधन हो गया।

नेताजी के निधन का समाचार शीघ्र ही पुरे देश में फैल गया। यहां तक कि जब जापान में नेताजी की मृत्यु का समाचार मिलो तो जापान सहित पूर एशिया में शोक की लहर दौड़ गई। आजाद हिन्द फौज के सैनिक इस समाचार को सुनकर बहुत दुखी हुऐ।

इसके पश्चात आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को जिन्हें मित्र राष्ट्रों की सेनाओं द्वारा मलाया, बर्मा, थाईलंड, सिंगापुर, बैकांक आदि अन्य जगहों से गिरफ्तार किया गया था, उन्हें भारत मे लाए जाने का निर्णय हुआ। मेजर हयूग टोपी ने इस विषेश अवसर पर लिखा है कि आजाद हिन्द फौज के अधिकारियों और सैनिको के भारत पहुंचने पर भारत में भयंकर होगा। क्योकि भारतीय जनता इनका देशभक्त मानत है अतः वे ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध खडे हो जाएगे तथा इन सैनकि को जनता द्वारा उपरोक्त अध्ययन के आधार पर कहा जा सकता है कि आजाद हिन्द सरकार के प्रधानमंत्री सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज की कमान अपने हाथ मे लेने के पश्चात आई.एन.ए का पुर्नगठन किया। इसके पाश्चात आई.एन.ए के सैनिकों के लिए ट्रेनिंग स्कूलों की स्थापना की ताकि इन सेनिकों को पूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त हो सके। इसके अलावा बर्मा में अस्थायी सरकार के गुप्तचर विभाग की स्थाना की जो आजाद हिन्द फौज के लिए शत्रु की जानकारी इक्ट्ठी करता था। इस विभाग को बर्मा में ग्रीन लाईट रोड़ पर स्थित एक स्कूल में स्थापित किया इस विभाग का नाम स्वराज संस्थान रखा गया। यह संस्था जापान की सरकार से वित्तीय और अन्य सैन्य सहायता प्राप्त करता था न कि आदेश।

नेताजी ने इस विभाग के अलावा युद्ध में पूर्णतया संचालन के लिए एक बार कौसिल का भी गठन किया। आजाद हिंद फौज से सैनिकों को इन स्कूलां एवं संस्थाओं में ट्रेनिंग के पश्चात बर्मा में भेजा गया। इसके पश्चात सुभाष ने आई.ए.ए की चार ब्रिगेड बनाई इन ब्रिगेडो के नाम सुभाष, गांधी नेहरू एवं आजाद आदि भारत के प्रमुख महान व्यक्तियों के नामो पर रखे गए। अस्थायी सरकार के गठन के पश्चात इस सरकार द्वारा मित्रों राष्ट्रो के खिलाफ युद्ध की घोषणा करने के पश्चात आजाद हिन्द फौज को बर्मा में युद्ध मोर्चो पर भेज दिया गया। आजाद हिन्द सरकार द्वारा अपना मुख्यालय भी सिंगापुर से बर्मा में स्थापित किया गया। आई.एन.ए. के पहली ब्रिगेड (सुभाष ब्रिगेड) जो कमाण्डर शाहनवाज खां के नेतृत्व में जनवरी 1944 ई0 में बर्मा पहुँची।

सुभाष ब्रिगेड को बर्मा में हाका फालम में युद्ध मोर्चे के सुरक्षा की जिम्मेदारी मिली ब्रिटेन के खिलाफ युद्ध में भाग लेने के लिए इस क्षेत्र की सुरक्षा के लिए कुछ जरूरी सैनिकों को छोड़कर शाहनवाज खां तामू के रास्ते कोहिमा जा पहुँचे। लेकिन कठिन परिस्थितियों को देखते हुए रसद और युद्ध सामग्री की कमी के वे कोहिमा से आगे नहीं बढ़ सके। इसी समय के दौरान आई.एन.ए. ने भारत की भूमि पर कदम रखा। इस दौरान शाहनवाज खां दिमापुर की तरफ से आगे बढ़ते हुए इम्फाल की तरफ आए। लेकिन उनको यहां से सितांग जाने का आदेश प्राप्त हुआ। युद्ध की कठिन परिस्थितियों को देखते हुए उन्हें वापस लौटना पड़ा इसी प्रकार से आजाद हिन्द फौज की अन्य ब्रिगेड़ भी बर्मा से भारत की आजादी के लिए ब्रिटिश सेना से लड़ने पहुची। आजाद हिन्द फौज की सुभाष ब्रिगेट की बटालियन ने मेजर रातुरी के नेतृत्व में कलादान क्षेत्र में लड़ते हुए अफ्रीकन हब्सियों की एक सेना को हराकर कलादान क्षेत्र में पीछे हटा दिया। इस बटालियन ने आगे बढ़ते हुए भारतीय सीमाके अन्दर आने वाली ब्रिटिश की मैडाक चौकी को जीत लिया और मेडाक में कैप्टन सूरजमल के नेतृत्व में एक सैन्य टुकड़ी को छोड़ दिया। आई.एन.ए को इस चौकी पर कब्जा सितम्बर 1944 ई. तक रहा।

इसी प्रकार से आजाद ब्रिगेड जिसके कमांडर गुलजारा सिंह थे। इन्होंने मई के मध्य में युद्ध लड़ते हुए तामू पहुंच कर सुभाष ब्रिगेड से जा मिले तथा यहां पर इस ब्रिगेड ने तामू से पलेल मार्ग की सुरक्षा संभालने का कार्य किया।

दिसम्बर 1944 ई0 को आजाद हिन्द फौज की नेहरू ब्रिगेड

जिसके कमांडर गुरूबख्स सिहं ढिल्लों थे उनको भी इम्फाल में हुए भंयकर युद्ध के पश्चात आगे बढ़ने का रास्ता नहीं मिला। इसके अलावा कैप्टन प्रेम कुमार सहगल भी पोपा में युद्ध करते हुए दुश्मन सैनिकों से चारो तरफ से घिरे हुए थे जिसके परिणाम स्वरूप उन्होंने अपने सैनिको सहित वहां से निकलकर एक गांव में शरण ली। पोपा में ब्रिटिश टैकों द्वारा आजाद हिंद फौज का बहुत हानि हुई।

गांधी ब्रिगेड जिसका नेतृत्व कर्नल आई. जे क्यानी कर रहे थे उनको इम्फाल में होने वाली लड़ाइ में शामिल होने का आदेश प्राप्त हुआ था उनकी इस ब्रिगेड के लिए इम्फाल की राह कठिन थी फिर भी वे 1944 ई0 तक कलेवा पहुंच गए थे। इसके बाद इम्फाल में हुई पराजय और मानसून की बढ़ती सक्रियता के कारण वे तामू पहुचे। तामू में आजाद हिन्द फौज और ब्रिटिश सेनाओं में भयंकर लड़ाई छिड़ी हुई थी। इनको तामू-से पलेल तक दुश्मन के खिलाफ गुरिल्ला युद्ध का आदेश मिला। तामू में आजाद हिन्द फौज की इन ब्रिगेडो ने बिना की स्त्रोत्रों के ब्रिटिश सेनाओं से लोह लिया। परन्तु मित्र राष्ट्रो द्वारा 1945 ई0 के आरम्भ में धुरी राष्ट्रों के पराजय होने लगी। धुरी राष्ट्रो में इटली और जर्मनी की पराजय के पश्चात् जापान अकेला पड़ गया था फिर भी जापान ने युद्ध जारी रखा। अतः मे अमेरिका द्वारा जापान के हिरोशिमा तथा नागाशाकी पर अणु बम गिराए जाने के पश्चात जापान ने मित्र राष्ट्रो के सामने आत्म सर्मपण कर दिया। अब आजाद हिन्द फौज चारों तरफ से दुश्मनों से घिर जाने के कारण हर मोर्चे पर बिफल हो रही थी अतः में आई.एन.ए. को सुभाष चन्द्र बोस के आदेश पर आत्मसर्मपण करना पड़ा। स्वयं सुभाष चन्द्र बोस बर्मा से जहाज में फार्मोसा पहुचे। फार्मोसा में टोकियों जाते समय में उनके जहाज में आग लग जाने के कारण 18 अगस्त 1945 ई. में सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु हो गई उनकी मृत्यु के पश्चात आजाद हिन्द फौज के सैनिकों का युद्ध बंदियों के रूप में भारत लाया गया।

**सन्दर्भ सूची -**

1. आई.एन.ए. फाईल न. 35।
2. मोती लाल भार्गव, इण्डियन नेशनल आर्मी पृ0.12
3. उपरोक्त वही, पृ0. 32
4. उपरोक्त वही पृ0.3
5. हरकीत सिंह आई एन ए. ट्रायल एण्ड द राज पृ0-18
6. के.के. घोष इण्डियन नेशनल आर्मी पृ0-166
7. के.के. घोष उपरोक्त पृ0-166-67
8. शिशिर कुमार आजादी की लड़ाई में आई.एन.ए. पृ0-48
9. उपरोक्त पृ0-49
10. एस.ए.अय्यर-पृ0 आजाद हिन्द फौज की कहानी पृ0-46
11. गिरिजा मुखर्जी, सुभाष चन्द्र बोस पृ0-139
12. राम सिंह जाखड़- आजाद हिन्द फौज और स्वतंत्रता संग्राम पृ0-17
13. के.के. घोष-पूर्वोक्त पृ0-166-67
14. शाह नवाज खां-पूर्वोक्त पृ0-127
15. उपरोक्त पृ0-128
16. तरूण भट्टाचार्य, वेस्ट बंगाल. 49
17. राम सिंह जाखड-पूर्वोक्त पृ0-19
18. अजीत सैनी-आजाद हिन्द फौज का इतिहास-पृ0-55
19. अजीत सैनी-उपरोक्त पृ0-55
20. राम सिंह जाखड़-उपरोक्त पृ0-20
21. अजीत सैनी-पूर्वोक्त पृ0-56
22. राम सिंह जाखंउ-पूर्वोक्त पृ0-20
23. अयोध्या सिंह-भारत का मुक्ति संग्राम-पृ0-627
24. अयोध्या सिंह-उपरोक्त पृ0-627
25. अयोध्या सिंह-पूर्वोक्त पृ0-627-28
26. शिशिर कुमार बोस-पूर्वोक्त-पृ0-50
27. अजीत सैनी पूर्वोक्त पृ0-58
28. राम सिंह जाखडऋ-पूर्वोक्त पृ0-24-25
29. शाह नवाज खां -पूर्वोक्त पृ0-133-34
30. शाह नवाज खां-उपरोक्त-पृ0-134
31. एस.ए.अय्यर-पूर्वोक्त-पृ0-47
32. अजीत सिंह-पूर्वोक्त -पृ0-58
33. राम सिंह जाखड़-पूर्वोक्त पृ0-31
34. के.के. घोष-इण्डियन आर्मी पृ0-51
35. शाह नवाज खां-पूर्वोक्त पृ0-134-35
36. एस.ए.अय्यर-पूर्वोक्त पृ0-48
37. एस. ए. अय्यर उपरोक्त पृ0-48
38. शाह नवाज खां पूर्वोक्त पृ0-138
39. राम सिंह जाखड़-पूर्वोक्त पृ0-36
40. प्छ। थ्पसमे 13ध्75ध्97.पृ0-36
41. अयोध्य सिंह-पूर्वोक्त पृ0-628
42. अयोध्य सिंह-पूर्वोक्त पृ-629-30
43. अयोध्य सिंह पूर्वोक्त पृ0-630
44. शाह नवाज खां पूर्वोक्त पृ0-140-41
45. शिशिर कुमार बसु-पूर्वोक्त पृ0-140-41
46. शिशिर कुमार बसु-पूर्वोक्त पृ0-50-51
47. अजीत सैनी पूर्वोक्त पृ0-60
48. शाह नवाज खां पूर्वोक्त पृ0-142
49. राम सिंह जांखड़ पूर्वोक्त पृ0-53
50. अयोध्या सिंह पूर्वोक्त पृ0-630
51. एस.ए.अय्यर -पूर्वोक्त पृ0-52
52. शाहनवाज खां पूर्वोक्त पृ0-142
53. राम सिंह जाखड़ पूर्वोक्त पृ0-56
54. शिशिर कुमार बसु-पूर्वोक्त पृ0-53
55. शाह नवाज खां पूर्वोक्त पृ0-153
56. शाह नवाज खा-पूर्वोक्त पृ0-154

57. अजीत सैनी पूर्वोक्त पृ0-63
58. शिशिर कुमार बसु-पूर्वोक्त पृ0-55
59. राम सिंह जांखड़-पूवोक्त पृ0-58
60. राम सिंह जांखड़-उपरोक्त पृ0-58-59
61. अजीत सैनी-पूर्वोक्त पृ0-67
62. अजीत सैनी उपरोक्त पृ0-67-68
63. ताराचंद-भारत का स्वतंत्रता संघर्ष पृ0-422
64. सुमित सरकार-आधुनिक भारत पृ0-
65. शाह नवाज खां पूर्वोक्त पृ0-173
66. अजीत सैनी पूर्वोक्त पृ0-62
67. एस.ए.अय्यर पूर्वोक्ता पृ0-62
68. एस.ए. अय्यर पूर्वोक्त-पृ0 69

**********